International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार

Meeto Devi
गांव-धाबी टेक सिंह
तहसील नरवाना, जिला जीन्द

शोध आलेख सारः- विश्व इतिहास में भारतीय संस्कृति का वही स्थान एवं महत्व है जो असंख्य द्वीपों के सम्मुख सूर्य का हैं, भारतीय संस्कृति ही हमारी पहचान है। भारतीय संस्कृति समय-समय पर नष्ट होती रही है किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी अपने अस्तित्व में विद्यमान हैं। भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों से बिल्कुल अलग हैं। भारतीय संस्कृति में विद्यमान कर्म, आध्यात्म, ललित कलाऐं, ज्ञान-विज्ञान विविध विधाऐं जीवन प्रणालियां और वे समस्त क्रिया कलाप उसे विशिष्ट बनाते हैं, जिन्होंनें भारतीयों के सामाजिक और राजनीतिक विचारों को धार्मिक और आर्थिक जीवन को, शिष्टाचार और नैतिकता को डाला है, भारतीय संस्कृति का अपना विकास क्रम रहा है। इस विकास क्रम में भारतीय संस्कृति का विविध संस्कृतियों से संघर्ष, मिलन ओर संपर्क से परिवर्तन तथा आदान-प्रदान होता रहा है जिसके कारण भारतीय संस्कृति में विविध श्रेष्ठ सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता रहा है।

मुख्य शब्द : भारतीय संस्कृति, औद्योगिकरण राष्ट्रीय एकता और भुमण्डलीकरण

वैश्विक प्रसारः- विश्व के विभिन्न देशों का आपसी संबंध इतना प्रगाढ़ हो जाना कि विश्व एक परिवार की भांति प्रतीत होने लगे। वैश्वीकरण के अन्तर्गत विश्व के तमाम देशों में परस्पर निकटता बढ़ाने के प्रयास किये जाते हैं। वैसे तो यह कार्य तमाम देशों में अदान्त भावना उत्पन्न होने पर ही संभव हो सकता है। परन्तु वर्तमान समय में विश्व के पारस्परिक एकीकरण में विज्ञान भी अपनी भूमिका निभा रहा है। आज विज्ञान ने अनेक प्रकार से वैश्वीकरण से अपनी उपयोगिता प्रदर्शित की है तथा दिन-रात यह इसी कार्य में लगा हुआ प्रतीत होता है।

भारतीय संस्कृति की अभिव्यक्ति धर्म भावना द्वारा होती है। इसकी दृष्टि में धर्म किसी पंथ का सूचक नहीं अपितू अंहकार को तिरोहित करके, देशकाल के बंधनों को काटकर मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश में, मृत्यु के मुख्य से अमृतमयी जीवन में पशुता से मानवता में और मानवता से अलौकिकता में ले जाने वाला शाश्वत तत्व है। इसी तत्व ने भौतिक सुखों से दुर रहकर शुद्ध सात्विक जीवन जीने का मार्गदर्शन किया है। राष्ट्र समाज कला, चिन्तन, आचार-विचार सबके मूल में अध्यात्म भावना निहित है। इसमें सत्यम् शिवम् सुन्दरम की व्यापक दृष्टि अवलोकित होती है। *''भारतीय संस्कृति अनेक मिली-जुली विचारधाराओं परम्पराओं और विविध बातों से संबंधित एक ऐसी गंगा की धारा है, जिसमें सामाजिक विचारधारा रूपी छोटी-बड़ी नदियां, यहां तक संकारी नलिका भी, आकर मिलने पर गंगा की ही भांति पवित्र बना जाती हैं, इस तरह इसमें देशकाल जैसी संकुचितता के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता। इन्हीं मौलिक एवं तात्विक विचारधाराओं को ध्यान में रखते हुए समन्वय की दृष्टि से विश्व भारतीय संस्कृति में देखा गया है और इसी से वसुदेव कुटूम्बकम के सिद्धान्त का प्रादुर्भाव हुआ है।''* [1]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि हमारी भारतीय संस्कृति अनेकता में एकता लाने का प्रयास करती है जिससे हमारा संगठन मजबूत बना रहे। अन्धकार को समाप्त कर उजाले की तरफ अग्रसर कर रही भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार हो रहा है।

आज का युग केवल विज्ञान और तकनीकी का युग नहीं है बल्कि इसके साथ-साथ सम्पूर्ण पृथ्वी पर होने वाली उन घटनाओं व समस्याओं से है जिनमें कोई भी व्यक्ति अछुता नहीं। आज विश्व के वैज्ञानिक तथा राजनेताओं के सामने बहुत सी समस्याऐं पनप रही हैं। आज का युग औद्योगिकरण, निजिकरण व आधुनिक जैसी महत्वपूर्ण क्रियाओं की ओर अग्रसर हो रहा है। इन्हीं धाराओं को समेटती हुई धारा है, भुमण्डलीकरण में रहने वाले उन सभी मानव, जीव जन्तु, पेड़-पौधों का भी संचलन होता है। आज विश्व में बहुत सी समस्याऐं सामने आ रही हैं। पुंजीवाद समाज को दिशा दिखाकर उसे अपनी आवश्यकताओं के अनुसार डालना चाहता था। इधर पिछले दो दशकों में काफी प्रसार हुआ है। संसार के विकासशील देशों में भी भुमण्डलीकरण हो चुका है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भुमण्डलीकरण एक ऐसा कानखजुरा है जिसके बावन हाथ हैं। वर्तमान जीवन का कोई भी पहलू इससे अछुता नहीं हैं। आज हर स्थिति में बदलाव हो रहा हैं। रहन-सहन वेशभुषा, संस्कृति, खान-पान तीज त्यौहार की रौनक उद्योग तक की दशा-दिशा की व्यापक पैमान पर भुमण्डलीकरण ने प्रभावित किया है। भूमण्डलीय दो क्षेत्रों पर बल देता है, उदारीकरण व निजिकरण।

उदारीकरण का अर्थ है औद्योगिक व सेना क्षेत्र की विभिन्न गतिविधियों से संबंधित नियमों में ढील देना और विदेशी कंपनियां प्रदान की जाती हैं।

वर्तमान सदी में विश्व के सामने जलवायु परिवर्तन से सम्बंधित हैं। भुमण्डलीय तापवृद्धि के कारणों में हरिग्रह गैसों के उत्सर्जन में निरन्तर वृद्धि वन विनाश आदि प्रमुख हैं। स्थानीय प्रादेशिक तथा भुमण्डलीय (वैश्विक) स्तर पर जलवायु में परिवर्तन भविष्य में प्रकृति के विभिन्न क्षेत्रों में सम्भावित व्यापक दुष्प्रभावों से विश्व समूदाय भयभीत हैं, भुमण्डलीय समस्याओं के प्रमुख कारण तथा स्त्रोंतों का निर्धारण कर लिया जाता है। जैसे-

''औद्योगिकरण एवं नगरीकरण में तीव्र गति से वृद्धि जनसंख्या में बेलगाम वृद्धि उत्पादक प्रोद्योगिकी में प्रगति भूमि उपयोग में भारी परिवर्तन आदि।'' [2] अभी हाल में ग्लोबल-ग्लोबल वार्मिंग रोकने के लिए निर्मित किये गये विश्वस्तरीय अन्तर्गत एक विश्वस्तरीय सम्मेलन में 160 देशों के 10,000 डेलगेट्स ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी थी। रिपों में 3 जुन से 14 जुन तक चलने वाले पर्यावरण तथा विकास सम्बन्धी संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलन एकत्रित विभिन्न राष्ट्रों के प्रतिनिधियों से बड़े ही मासिक शब्दों में कहा था।

''यद्यपि हम सभी एक ही पृथ्वी के निवासी हैं, किन्तु विश्व के विभिन्न देशों की सोच अलग-अलग हैं। हम एक ही जीव मण्डल पर अपने जीवन के लिए निर्भर हैं, किन्तु प्रत्येक समुदाय, प्रत्येक देश बिना किसी दूसरे की चिन्ता किये अपनी समृद्धि तथा अपने अस्तित्व के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहता हैं। कुछ भावी पीढ़ी की चिन्ता किये बगैर पृथ्वी के संसाधनों को शोषण करने में लगे हुए हैं। दूसरी ओर भूख-गरीबी, बीमारी तथा असमय काल-कवलित होते हुए भारी संख्या में लोग जीवन यापन कर रहे हैं'' [3]

अनेक संस्कृतियों और जातियों के मिलन से भारतीय संस्कृति में जो एक प्रकार विश्वजीननता उत्पन्न हुई हैं, वह संसार के लिए सचमुच एक वरदान है और पिछले दो सौ वर्षों से सारा संसार उसका प्रशंसक रहा हैं। भारतीय संस्कृति की इस विशेषता को लोग बड़े विस्मय से देखते हैं। सुप्रसिद्ध इतिहासकार मिस्टर डाडवेल ने लिखा है कि *''भारतीय संस्कृति एक महासमुद्र के समान हैं जिसमें नदियां आकर विलीन होती रही हैं।''* [4] मुसलमानी आक्रमण से पहले जो तुर्क लोग इस देश में आये थे, उनका क्या हाल हुआ, इसका रहस्य बतलाते हुए एक अन्य सुप्रसिद्ध इतिहासकर मिस्टर स्मिथ ने लिखा है कि विदेशी लोगों ने भी अपने पहले अपने वाले शकों और युचियों के समान ही हिन्दु धर्म को पाचन शक्ति के सामने-अपने घुटने टेक दिये और वे बड़ी ही शीघ्रता से वे हिन्दुत्व में विलीन हो गये। इस तरह भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार बढ़ रहा था, कभी कट रहा था।

विभिन्न भाषाओं के आधार पर भारत में जातियों की जो पहचान की गई हैं उनका उल्लेख करते हुए डा0 सुनीति कुमार चटर्जी ने लिखा है कि भारतीय जनता की रचना जिन लोगों को लेकर हुई हैं, वे मुख्यतः तीन भाषाओं में विभक्त की जा सकती है अर्थात औष्ट्रिक अथवा आग्नेय, द्राविड़ और हिन्दी-युरोपीय, नीगों से लेकर आर्य तक जो भी लोग इस देश में आये उनकी भाषाएं इन भाषाओं के भीतर समाई हुई है। असल में भारतीय जनता की रचना आर्यों के आगमन के बाद ही पूरी हो गई। आर्यों ने भारत में जातियों और संस्कृतियों का जो समन्वय किया उसी से हमारे हिन्दु समाज और हिन्दु युनानी, यूची शक हुण और तुर्क जो भी आऐ उन्हें इस समन्वय में दस्तान्दाजी करने की हिम्मत नहीं हुई और वे समर्पण के भाव से इस समन्वय के सामने सिर झुकाते और उसमें विलीन होते चले गए इस स्थिति को देखते हुए भी जयचन्द्र विद्यालंकार ने एक सूचित कही है *''भारतवर्ष की जनता, मुख्यतः आर्य और द्राविड नस्लों की बनी हुई है और उसमें थोड़ी सी छौंक शबर और किरात (मुंड और तिब्बत-बर्मी) की है।''* [6]

सच तो यह है रक्त भाषा और संस्कृति सभी दृष्टियों से भारत की जनता अनेक मिश्रणों से युक्त हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में बहुत सी बोलियों का विकास हुआ है। 14 वीं शताब्दी के पहले जो खड़ी बोली कौरवों के नाम से दिल्ली और उसके आस-पास के सीमित इलाके में कही सुनी जाती

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

है उसने क्रमशः नव भाषा के रूप में अपनी पहचान स्थिर की जब साहित्य में अवधी और ब्रज को उचांईया मिल रही थी। खड़ी बोली ने उत्तर भारत के अधिकांश इलाकों में जनता की भाषा के रूप में अपनी पैठ जमाई। साधुओं फकीरों, तीर्थयात्रियों, व्यापारियों को भाषा खड़ी बोली बन गई, जनभाषा के रूप में खड़ी बोली के इसी विस्तार ने 19 वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में भारतीय अस्मिता के प्रतीक के संजने खड़ी बोली को प्रतिष्ठित किया भारतेन्दु हरिचन्द ने निज भाषा को देश के संपूर्ण विकास का मूल घोषित करते हुए लिखा है-

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल

अन्त में कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता, उद्योग का विस्तार स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार आपसी भाईचारे का प्रेम इन सभी से भारतीय संस्कृति में वैश्वीकरण की भावना को बल मिला है, संचार व यातायात के साधनों द्वारा तोड़कर एक-दूसरे के नजदीक आये, एक दूसरे की भाषाओं और उपदेशों से प्रेरित हुए जिससे हमारी संस्कृति का वैश्वीकरण मजबूत होता चला गया और आनेवाले समय में भी भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार होता रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूचिः-

1. भारतीय कलां एवं संस्कृति संपादक जे.के. चौपड़ा युनिक पब्लिसर पेज-9
2. सविन्द्र सिंह, पर्यावरण भुगोल प्रकाशन प्रयाग पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड़, ईलाहाबाद संस्करण 2004, पृष्ठ 535
3. डी.एस. लाल भौतिक भुगोल प्रकाशन शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद संस्करण 2012, पृष्ठ 375
4. हमारी सांस्कृतिक एकता, रामधारी सिंह दिनकर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दरियागंज
5. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय लोक भारत प्रकाशन-ईलाहाबाद 211001 पेज नं. 35
6. बेलन्द शेखर तिवारी अभिषेक अवंतस कार्यलयी हिन्दी, क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी नई दिल्ली-110015 पेज-25